Research Paper Hindi

लोकनायक गुरु रविदास जी एवं बेगमपुरा की अवधारणा ।

Loknayak Guru Ravidas Ji Evam Begampura ki Avadharana

Mrs Neelam

W/o Mr Vikram Dhaanda, J-48 , Sarojini Nagar, New Delhi -110023

ABSTRACT

इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियां हमें बाध्य कर रही हैं कि कि हम चौदहवीं शताब्दी के सन्त गुरु रविदास के जीवन-दर्शन,चिंतन को जाने समझें और अपने जीवन में उतारें । उनका जीवन दर्शन किसी भी व्यक्ति को एक बेहतर इन्सान ,एक बेहतर नागरिक बनने की उर्जा प्रदान करता है । सन्त गुरु रविदास जी का चिन्तन सब प्रकार के पूर्वाग्रहों, स्वार्थों व संकीर्णताओं से मुक्त है। जिसकी वर्तमान समय में बेहद आवश्यकता है। उनका चिंतन जहां एक ओर श्रम- संस्कृति को बढावा देता है, वहीं दूसरी ओर धार्मिक पाखण्डों को चुनौती देता है । उनके जीवन दर्शन में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए चिंता झलकती है । उनकी बेगमपुरा अर्थात 'दुःखहीनता, समानता और निर्भयता को समेटे एक आदर्श व्यवस्था' की संकल्पना अपने-आप में बेजोड़ व अनूठी है । बेगमपुरा गुरू रविदास जी के समतामूलक समाज के स्वप्न का साकार रूप है ।

KEYWORDS : गुरू रविदास जी, बेगमपुरा, समानता, समाज, जाति, धर्म

ऐसा चाहूँ राज मैं जहां मिलै सबन को अन्न ।
छोट बडो सभ सम बसै, रविदास रहै प्रसन्न ॥

इन पंक्तियों के रचनाकार संत गुरू रविदास जी को नमन । इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियां हमें बाध्य कर रही हैं कि हम चौदहवीं शताब्दी के सन्त गुरु रविदास जी के जीवन-दर्शन व चिंतन को जाने समझें और अपने जीवन में उतारें । उनका जीवन दर्शन किसी भी व्यक्ति को एक बेहतर इन्सान, एक बेहतर नागरिक बनने की उर्जा प्रदान करता है । सन्त गुरु रविदास जी का चिन्तन सब प्रकार के पूर्वाग्रहों, स्वार्थों व संकीर्णताओं से मुक्त है। जिसकी वर्तमान समय में बेहद आवश्यकता है। उनका चिंतन जहां एक ओर श्रम- संस्कृति को बढावा देता है, वहीं दूसरी ओर धार्मिक पाखण्डों को चुनौती देता है । उनके जीवन दर्शन में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए चिंता झलकती है। उनकी बेगमपुरा अर्थात 'दुःखहीनता, समानता और निर्भयता को समेटे एक आदर्श व्यवस्था' की संकल्पना अपने-आप में बेजोड़, अनूठी व आज भी प्रासंगिक है । बेगमपुरा गुरू रविदास जी के समतामूलक समाज के स्वप्न का साकार रूप है । गुरु रविदास अपने जीवन दर्शन के कारण देश-काल की सीमाओं को लांघकर पूरे विश्व में समादृत हैं ।

चौदहवीं सदी के दौरान भारत में जाति- पाति, धर्म, वर्ण, छूत-अछूत, पाखण्ड अन्धविश्वास का साम्राज्य स्थापित हो गया था, देश और समाज विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था । इस काल में अनेकों सन्त और भक्त पैदा हुए जिन्होंने अपने आलौकिक ज्ञान से समाज को अज्ञान, अधर्म और अन्धविश्वास के अन्धकार से निकालकर स्वर्णिम आभा प्रदान की । इन्ही महान आत्माओं में एक थे सन्त गुरु रविदास जी, जिन्हें सन्त रैदास के नाम से भी जाना जाता है । गुरु रविदास जी मध्यकालीन धर्म साधना में एक ऐसे सन्त के रूप में सामने आते है, जिन्होंने अपनी सामाजिक उपस्थिति से अपने जीवन काल में ही लोकनायक का दर्जा हासिल कर लिया था । इन्होंने पोथी संस्कृति का प्रतिवाद करते हुए 'मानुष संस्कृति' की बात की है । सन्त गुरु रविदास जी ने हिन्दू संस्कृति की रूढियों , कर्मकांडों का विनम्रतापूर्वक प्रतिवाद करते हुए अपना पक्ष रखा, जिससे ये सामाजिक जागरुकता और 'चरित्र बल' के प्रतीक बन गए । 'साधुता' इनके स्वभाव में

थी और 'स्वाभिमान' इनके संस्कार में था । इस कारण से इन्होंने अपने पदों व साखियों में कर्म करने को पर्याप्त प्रतिष्ठा दी । इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इन्होंने मानवीय समस्याओं के लिए कोई आलौकिक समाधान न खोजकर नितांत मानवीय समाधान सुझाया । अपना दारिद्रय दूर करने के किए अपने श्रम और कर्म को ही आधार बनाया । इनकी साखियाँ कर्म साधना, जात-पाँत विरोध, प्रेम पंथ, स्वाधीनता का उद्घोष करने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज है ।[1] गुरु रविदास जी की दृष्टि -बिन्दु समाज के निम्न वर्ग से किए जा रहे शोषण को समाप्त करने पर केन्द्रित हुई थी । उन्होंने तद्युगीन समाज में पनप रहे समाज के आयामों एवम उससे जुडे प्रश्नों को हल करने के लिए धर्म और नैतिकता को आधार बनाया । जीवन की समस्याओं को नए नजरिए से देखकर उसके मूल कारणों को खोजकर उन्हें समाप्त करने के लिए नए प्रतिमानों को स्थापित किया । इस प्रकार उलझे हुए, विषादपूर्ण जीवन एवम खण्डित मन:स्थितियों को सही तौर पर नई राह दिखाई । [2]

अनेक दृष्टियों से सन्त गुरु रविदास जी का व्यक्तित्व और कृतित्व महत्वपूर्ण है । कथ्य और कहन की दृष्टि से न केवल उनका काव्य विलक्षण है, वरन उनका पूरा जीवन भी चुनौतियों और संघर्षों की गाथा है । उनका जन्म चर्मकार कुल में हुआ । सामाजिक स्तर की दृष्टि से यह जाति नीचे के पायदान पर थी । अन्य अनेक अस्पृश्य जातियों की तरह यह जाति भी दोहरे उत्पीड़न का शिकार थी - एक ओर विधर्मियों द्वारा धर्मांतरण के लिए बढता दबाव, तो दूसरी ओर अपने ही धर्मावलम्बियों द्वारा अमानवीय उपेक्षा। [3] सन्त रविदास जी ने अपने जीवन और अपनी वाणियों में दोनों दिशाओं से आने वाली चुनौतियों का सामना किया । गुरु रविदास जी प्रबोधन का स्वर लेकर आए । उनका यह स्वर समाधानकारक है । वह तथाकथित छोटी जाति में पैदा हुए, लेकिन हीनता की कोई ग्रंथि उनमें नहीं थी । स्वयं जातिगत भेदभाव से पीडित होने के बावजूद गुरु रविदास जी ने छाती ठोककर अपनी जाति का उल्लेख अपनी बानियों में किया है ।(4)

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ।

रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥[5]

कहि रविदास खलास चमारा ।

जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥[6]

स्वयं का परिचय जिस गर्व से दे रहे हैं स्तुत्य है, निर्भीकता कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं ।[7]

गुरु रविदास जी श्रमशील जीवन शैली के प्रेरक प्रतीक थे । जल से नहाया आदमी स्वच्छ होता है, लेकिन पसीने से नहाया हुआ आदमी पवित्र होता है, यही गुरु रविदास जी का आदर्श था । वह स्वयं दीन थे, लेकिन केवल प्रभु के सामने । वह स्वयं सम्पन्न नहीं थे, लेकिन अपने से निर्धन लोगों की सहायता करते थे । परिश्रम से कमाना, संयम से उपभोग करना और समय आने पर प्रेम से दान करना यही उनके जीवन का यथार्थ था । यही उनका अध्यात्म था ।

रविदास श्रम करि खाई ही, जौ लौ पार बसाय ।
नेक कमाइ जउ करइ, कबहु न निहफल जाय ॥
श्रम करहु ईसर जानिके, जउ पूजहि दिन रैन ।
रविदास तिन्हहि संसार मंह, सदामिलहि सुख चैन ॥[8]

जिव्हाभजे हरी राम नित, हाथ करहि नित काम
रविदास भये निहचिंत हम, मम चिन्त करेंगे राम ॥[9]

उनकी विचारधारा सामाजिक समानता की थी । इसलिए उनकी छवि में न कोई जाति निम्न थी, न कोई कारोबार घृणित । सन्त रविदास जी ने यह महसूस कर लिया था कि मानवता को बचाने के लिए मनुष्य को मनुष्य का रक्षक, हमदर्द, हमसफ़र बनाना अत्यावश्यक है । वे जानते थे कि जब तक ऐसा नही होगा तब तक लोगों में समानता का भाव नही आ सकता । उन्होंने डगमगाती मानवता को सहारा देने के लिए पददलित और घृणित लोक-समूह में आत्मविश्वास पैदा करने का संकल्प किया था । उन्होंने जाति -पाति व छूआछात की तीव्र भर्त्सना की और कहा -

जात जात में जात है, ज्यों केलन के पात ।
रविदास न मानुष जुड सकें, ज्यो जो जात न जात ॥[10]

कहि रविदास खलास चमारा ।

जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥[6]

स्वयं का परिचय जिस गर्व से दे रहे हैं स्तुत्य है, निर्भीकता कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं ।[7]

गुरु रविदास जी श्रमशील जीवन शैली के प्रेरक प्रतीक थे । जल से नहाया आदमी स्वच्छ होता है, लेकिन पसीने से नहाया हुआ आदमी पवित्र होता है, यही गुरु रविदास जी का आदर्श था । वह स्वयं दीन थे, लेकिन केवल प्रभु के सामने । वह स्वयं सम्पन्न नहीं थे, लेकिन अपने से निर्धन लोगों की सहायता करते थे । परिश्रम से कमाना, संयम से उपभोग करना और समय आने पर प्रेम से दान करना यही उनके जीवन का यथार्थ था । यही उनका अध्यात्म था ।

रविदास श्रम करि खाई ही, जौ लौ पार बसाय ।
नेक कमाइ जउ करइ, कबहु न निहफल जाय ॥
श्रम करहु ईसर जानिके, जउ पूजहि दिन रैन ।
रविदास तिन्हहि संसार मंह, सदामिलहि सुख चैन ॥[8]

जिव्हाभजे हरी राम नित, हाथ करहि नित काम
रविदास भये निहचिंत हम, मम चिन्त करेंगे राम ॥[9]

उनकी विचारधारा सामाजिक समानता की थी । इसलिए उनकी छवि में न कोई जाति निम्न थी, न कोई कारोबार घृणित । सन्त रविदास जी ने यह महसूस कर लिया था कि मानवता को बचाने के लिए मनुष्य को मनुष्य का रक्षक, हमदर्द, हमसफ़र बनाना अत्यावश्यक है । वे जानते थे कि जब तक ऐसा नही होगा तब तक लोगों में समानता का भाव नही आ सकता । उन्होंने डगमगाती मानवता को सहारा देने के लिए पददलित और घृणित लोक-समूह में आत्मविश्वास पैदा करने का संकल्प किया था । उन्होंने जाति -पाति व छूआछात की तीव्र भर्त्सना की और कहा -

जात जात में जात है, ज्यों केलन के पात ।
रविदास न मानुष जुड सकें, ज्यो जो जात न जात ॥[10]

बेगमपुरा सहर का नाऊँ ।
दु:ख अंदोह नही तिहि ठाउ ।
न तसवीस खिराजु न मालु ।
खउफु न खता न तरसु ज्वालु ।।
अब मोहि खूब वतन गई पाई ।
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ।
काईमु दाईमु सदा पाति सा-ही ।
दो मन सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ।
ऊहां गनियां वैसे मामूर ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ।
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ।
जो हम सहर सौ मीतु हमारा ॥[14]

बेगमपुरा' अर्थात दुखहीनता, समानता और निर्भयता को समेटे एक आदर्श व्यवस्था । इस शबद में गुरू रविदास जी ने एक ऐसे आध्यात्मिक नगर कि कल्पना की है, जो सभी प्रकार के कष्टों से रहित, धन समृद्धि से भरपूर, समानता का मन्दिर है, जहां कोई भूखा ना रहे । गुरु रविदास जी कहते हैं कि जिस आध्यात्मिक अवस्था रूपी शहर में मैं बसता हूं उस शहर का नाम बेगमपुरा है। वहां पर रहने वाले उस आध्यात्मिक नगर के ज्ञाता हैं । इस शहर में किसी को कोई दु:ख नहीं है। दु:ख किसी को तब हो, जब कोई दु:ख देकर सुख का अनुभव करता हो ? दैहिक, दैविक और भौतिक यहाँ किसी को कोई संताप नहीं है । संत गुरू रविदास जी कहते हैं कि मैंने तो उस शहर के मार्ग को प्राप्त कर लिया है , जिसे इस प्रकार के शहर में रहना हो मेरे साथ चले ।

गुरू रविदास जी इस शहर की विशेषताओं के बारे बताते है कि, साधारणत: लोगों को सोते-जागते खटका सा लगा रहता है कि कब कोई चोर चोरी करके ले जाए । लेकिन मेरे बेगमपुरा में किसी को कोई खटका नहीं, कोई चिंता नहीं । किसी को कोई चीज खो जाने की चिंता नहीं । मेरा बेगमपुरा किसी राजे- रजवाड़े की बस्ती नहीं है कि खिराज देना पड़े, कोई महसूल या चुंगी यहाँ

नहीं देनी पड़ती । राजा के मनसबदार और मनसबदार खिराज की वसूली में, तरह-तरह से तंग करते है, रौब जमाते है । जबकि यहां ऐसा कुछ नहीं है ।

यहाँ जात-पात नहीं है । जाति होती तो गाहेबगाहे जाति से बाहर कर दिए जाने का डर होता । जन्म के कारण यहां कोई नीच नहीं है । तो नीच समझे जाने का भी दु:ख नहीं है । यहाँ के लोग मदिरापान नहीं करते । बेगमपुरा के लोगों के कान में किसी ने फूँक दिया कि ऐसी मदिरा का क्या पीना, जो अब पी और कुछ देर में उतर जाए । यहाँ सब नाम रुपी महारस का निरंतर पान करते रहते है । यहाँ कोई किसी को त्रास नहीं देता । कुछ लोगों की प्रकृति होती है कि दूसरों को सताने में आनंद मिलता है । ऐसा आनंद मानवीय नहीं अमानवीय होता है । बेगमपुरा में ऐसे लोग नहीं हैं । जब कोई सताया नहीं गया तो आप करुणा किस पर करेंगे ? तरस किस पर खांएगें ? दया का भी एक दंश होता है। यह दंश बडा सूक्ष्म होता है । इसका दर्द और विष विचित्र होता है । यहाँ न कोई पतित है न कोई पतितोन्मुख है । फिर यहाँ आर्तनाद कैसा ? यहाँ फरियाद क्यों ?

बेगमपुरा का शासन स्थिर, अडिग और सीमा रहित है । बेगमपुरा में पातशाही सदा कायम रहती है । यहाँ की पातशाही चरित्र हनन की, राजनीतिक षडयंत्र की शिकार नहीं होती । जो कायम हुआ सो कायम रहा । जो एक बार स्थापित, वह सदा के लिए स्थापित ।[15]

बेगमपुरा में सामाजिक प्रतिष्ठा के लिहाज से सब एक ही पायदान पर हैं । यह पहले दर्जे का नागरिक, यह दूसरे दर्जे का नागरिक है, यह तीसरे दर्जे का नागरिक है । नहीं, यहाँ ऐसा नहीं है । सबका एक जैसा दर्जा, सबकी एक जैसी प्रतिष्ठा ।

यहाँ की आबोहवा और आबोदाना बड़े मशहूर है । यहाँ कि जलवायु सेहतमंद है। दूर-दूर तक चर्चा है कि यहाँ का जल बड़ा मीठा है । यहाँ के अन्न के तो कहने ही क्या । यहाँ हर किसी को भरपेट अन्न मिलता है । बेगमपुरा में कोई रात को भूखा पेट नही सोता । हर शहर में कुछ ऐसे क्षेत्र होते है जहाँ आम आदमी नहीं जा सकता । वह प्रतिबंधित क्षेत्र होते है । लेकिन बेगमपुरा के वासी जहां भी चाहे वहां आनन्दपूर्वक घूम सकते है । शाही महलों के पूर्ण भेदी भी उन्हें कहीं आने-जाने से नहीं रोकते अर्थात प्रजा राजा के सभी भेदों से परिचित है । राजा और प्रजा एक -दूसरे के विश्वासपात्र हैं । रविदास जी कहते हैं कि जो ऐसे मित्रता और प्रेम में बंधे शहर का वासी होगा, वही मेरा मित्र होगा।

यह चौदहवीं शताब्दी के एक संत की सुख-राज्य (यूटोपिया) की दृष्टि थी । इस पद के कुछ बिंदुओं की ओर हमारा ध्यान जाता है । कार्ल मार्क्स ने एक ऐसे सुख-राज्य की कल्पना उन्नीसवीं शती में की थी । वह मानते थे कि जब सारे संसार पर सर्वहारा का शासन स्थापित हो जाएगा तो संसार के सभी विवाद और झग़डे समाप्त हों जाएगें । उस संसार में फिर शासक -शसित, पूंजीपति-मजदूर, अमीर-गरीब, सेना-पुलिस आदि की आवश्यकता नही रहेगी । राज्य की आवश्यकता भी नही होगी। वह पेड़ पर लगे सूखे पत्तों की तरह झर जाएगा ।

मार्क्स के इस स्वप्न को पूरा करने का प्रयास संसार के कितने ही भागों में हुआ, किंतु वह किस हद तक सफल रहा, यह हम सब जानते हैं। किंतु इतना निश्चित है कि आज सारा संसार उस दिशा में आगे बढ रहा है, जिसकी कल्पना गुरू रविदास जी ने छह सौ वर्ष पहले की थी।[16] इस प्रकार गुरु रविदास जी ने विश्व को एक नया सिद्धांत दिया । पूरी तरह आध्यात्मिकता का जीवन अपनाने वाले एक संत के पास इस तरह के दृष्टिकोण को देखकर आम बुद्धिजीवियों को विचित्रता का अहसास होगा ।

रांगेय राघव के अनुसार ''जब संसार में कार्ल मार्क्स नहीं था, जब संसार में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का चिंतन नहीं था, तब भी मनुष्य अन्याय के विरुद्ध लडता था और यह संघर्ष मध्यकाल के संतों में हमें दिखाई देता है ... वे सब निम्न जातियों की मुक्ति के लिए उठे स्वर थे । ''[17

कितना अद्‌वितीय और अतिविशिष्ट है गुरु रविदास जी का चिन्तन जिसमें अपने युग की सम्पूर्ण चेतना मुखर हो उठी है । वर्णव्यवस्था को नकारते, समानता, सद्भावना का उपदेश देते गुरू रविदास जी अपनी वाणियों के माध्यम से विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देते है । निस्संदेह गुरु रविदास जी अपने युग के ही नहीं सभी युगों के द्रष्टा हैं, वे पुरुषार्थी, सच्चे योगी, समाजसेवी व कर्मठ भक्त हैं । कहा जा सकता है कि इनका एक ही सपना था ' भेदभाव मुक्त समाज ' का सपना, एक ऐसा समाज जहां कहीं भी मानव को मानव से दूर करने वाली लकीरें न हो ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. सन्त रविदास रत्नावली, सम्पादक ममता झा, पृ. 15, प्रकाशक - ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण -2013 ।

2. सन्त रविदास और गुरु अमरदास का काव्य, डॉ. राजेन्द्र सिंह, पृ. 155-156, पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संसकरण -2001 ।

3. सन्त रविदास की रामकहानी, डॉ. देवेन्द्र दीपक, पृ. 9, प्रकाशक आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली ।

4. वही पृ.10 ।

5. रविदास ठाकुर बणि आई, सोमा अत्रि 'राधा', पृ.57, प्रकाशक डेरा स्वामी जगत गिरी ट्रस्ट, पठानकोट ।

6. वही, पृ.194 ।

7. हिंदी के कालजयी कवि, प्रो. सरिता वाशिष्ठ, पृ. 207, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली ।

8. संत रविदास और गुरू अमरदास का काव्य, डॉ ऱाजेन्द्र सिंह, पृ.34, पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली ।

9. वही पृ.35 ।

10. वही पृ.154 ।

11. हिंदी के कालजयी कवि, प्रो. सरिता वाशिष्ठ , पृ. 207, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली ।

12. वही पृ. 210 ।

13. संत रविदास और गुरू अमरदास का काव्य, डॉ. राजेन्द्र सिंह, पृ. 36, पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली ।

14. वही पृ.164

15. सन्त रविदास की रामकहानी, डॉ. देवेन्द्र दीपक, पृ. 166, प्रकाशक आर्य प्रकाशन मंडल ,दिल्ली ।

16. रचना- संचय, महीप सिंह ,पृ.452 (आलेख - संत रविदास : एक सुख-राज्य का स्वप्न)किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली ।

17. संगम और संघर्ष, रांगेय राघव, पृ. 92-93, प्रकाशक किताब महल ।